



फरवरी: 2022

वर्ष : 5 अंक : 5

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



संस्थान का मासिक समाचार, फरवरी 2022 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

हम सभी के लिए फरवरी के महीने का एक विशेष महत्व है। यह अकेला सबसे कम अवधि वाला महीना है जो समान्यतः 28 दिनों का होता है पर प्रत्येक 4 वर्ष पर यह 29 दिनों का हो जाता है जिसे 'लीप वर्ष' कहा जाता है। हालांकि सबसे कम दिन होने पर भी यह एक उल्लास पूर्ण माह है। इस माह वसंत ऋतु का आगमन होता है। सर्दियों के बाद आने वाली वसन्त ऋतु में तापमान में नमी आ जाती है और सभी जगह हरे-भरे पेड़ों और फूलों के कारण चारों तरफ हरियाली और रंगीन दिखाई देता है। वसंत ऋतु के आगमन पर सब लोग वसंत पंचमी का त्यौहार मनाते हैं। देश के बहुत से भागों में इस दिन विद्या की देवी " माँ सरस्वती "की पूजा और अर्चना की जाती है।

वसंत ऋतु के आगमन पर किसान नई फसलों के पकने का इंतजार करने लगते हैं। सरसों के पीले-पीले फूल खिल-खिल कर खुशी व्यक्त करते हैं। सरोवरों में कमल के फूल खिल कर इस तरह पानी को छिपा लेते हैं जो हमें यह संकेत देते हैं कि अपने सारे दुखों को समेट कर खुल के जीवन का आनंद ले।

मैं आशा करता हूँ कि जिस प्रकार वसंत ऋतु अच्छी भावनाएं, अच्छा स्वास्थ्य और पौधों को नया जीवन देती है उसी प्रकार हम भी अच्छी भावनाएं रखें जिससे हमारे जीवन में नई ऊर्जा का संचार हो और हम अपने लक्ष्यों के प्रति अधिक सचेष्ट होकर उन्हें प्राप्त कर सकें।

आइये, हम सभी मिलकर वसंत ऋतु का स्वागत एक नए संकल्प के साथ करें।

धन्यवाद,

बिजेन्द्र

(बसन्त कुमार दास)

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने मनाया नदी उत्सव-2021



भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के सहयोग से 22 दिसंबर 2021 को शेओराफुली निस्तारिणी गंगा घाट पर "नदी उत्सव" मनाया। जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार ने गंगा नदी तट क्षेत्र में और उसके आसपास रहने वाले लोगों सहित विभिन्न हितधारकों में नदी पारिस्थितिकी तंत्र पर जागरूकता पैदा करने के प्रमुख उद्देश्य के साथ 'नदी उत्सव' को मनाने का निर्णय लिया है। नदी उत्सव का एक दूसरा लक्ष्य नदी की स्वच्छता, जलीय जैव विविधता के संरक्षण और नदी पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़े जलवायु संबंधी कारकों के बारे में जागरूकता पैदा करना भी है। संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने अपने संबोधन में दुनिया की





विभिन्न प्रमुख नदियों में हुए नदी उत्सव की भूमिका पर जोर दिया और नदी के स्वास्थ्य को अच्छी स्थिति में रखने के लिए लोगों की भागीदारी पर प्रकाश डाला। डॉ. दास ने स्वदेशी जर्मप्लाज्म संरक्षण को बढ़ाने की दिशा में स्वदेशी मछली प्रजातियों के पालन के माध्यम से गंगा नदी के स्वस्थ पर भी जोर दिया। डॉ. दास ने स्थानीय लोगों को मूल स्वदेशी मछली की आबादी में वृद्धि करने के लिए नदी के स्वास्थ्य को बनाए रखने की सलाह दी। स्थानीय नगर पालिका पार्षद श्री बलराम घोष ने नदी की सफाई, मछली पालन और जागरूकता कार्यक्रम के संबंध में संस्थान के प्रयासों पर प्रसन्नता व्यक्त की। डॉ. संदीप बेहरा, जैव विविधता सलाहकार एनएमसीजी ने नदी महोत्सव के महत्व और नदी स्वास्थ्य, पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता संरक्षण की दिशा में एनएमसीजी द्वारा की जाने वाली महत्वपूर्ण गतिविधियों पर प्रकाश डाला। डॉ. बेहरा





ने लोगों की भागीदारी के माध्यम से नदी की सफाई और जैव विविधता संरक्षण की दिशा में एनएमसीजी द्वारा की गई वर्तमान गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला। डॉ. बेहरा ने नदी संसाधनों के सतत उपयोग और मानव और नदी के बीच उचित संतुलन बनाए रखने के लिए उचित तरीके को अपनाने के बारे में भी लोगों को बताया। इस उत्सव के मौके पर, संस्थान ने गंगा नदी के तट पर शेओराफुली घाट पर रोड शो, स्थानीय लोक गीत और गंगा आरती सहित नदी स्वास्थ्य प्रबंधन और पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। स्थानीय मछुआरों, जनता और भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) का प्रतिनिधित्व करने वाले कुल 150 से अधिक लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का समापन डॉ. ए. के. साहू के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास की प्रेरणा से और एनएमसीजी टीम के सदस्यों, और संस्थान के कर्मचारियों द्वारा स्वच्छ भारत मिशन और आजादी का अमृत महोत्सव@75 के तहत मनाया गया।



डा. एस अय्यप्पन, पूर्व सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक और सिफरी परिवार के सदस्य को पद्मश्री सम्मान

पद्म श्री डा. एस अय्यप्पन (पूरा नाम - डा. सुब्बान्ना अय्यप्पन) एक प्रतिष्ठित जलीय कृषि वैज्ञानिक हैं, जिनका देश की नीली क्रांति में विशेष योगदान रहा है। उन्होंने मैंगलोर में मत्स्य पालन कॉलेज से मछली उत्पादन और प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की तथा बेंगलोर विश्वविद्यालय से पीएचडी किया। उन्होंने मत्स्य पालन, मीठा जल क्षेत्र और जलीय सूक्ष्म जीव विज्ञान पर शोध पत्र प्रकाशित किया है। वह सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व महानिदेशक रह चुके हैं तथा वर्तमान में केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल के कुलाधिपति हैं।



इनका जन्म 10 दिसंबर 1955 को कर्नाटक राज्य के अलाकेरे में हुआ। इन्होंने जिन्होंने जल कृषि विज्ञान से संबंधित विभिन्न सरकारी संगठनों में कई प्रमुख पदों पर कार्य किया है। उदाहरण स्वरूप, वे जनवरी 2010 - फरवरी 2016 के दौरान सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक और केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, मणिपुर के कुलाधिपति भी रहे। वे सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा

विभाग एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व महानिदेशक पद पर आसीन होने वाले प्रथम जल कृषि वैज्ञानिक हैं। उन्होंने मत्स्य पालन, लिम्नोलॉजी और जलीय सूक्ष्म जीव विज्ञान के क्षेत्रों में कई शोध पत्र प्रकाशित किये।

डा. अय्यप्पन ने 1978 में केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में एक वैज्ञानिक के रूप में अपने कर्म जीवन का शुभारंभ किया जो हम सभी सिफरी वालों के लिए अत्यंत ही गर्व का विषय है। वर्ष 1996 में वे केन्द्रीय मीठा जलजीव पालन संस्थान, भुवनेश्वर के निदेशक के रूप में नियुक्त हुए। इसके पश्चात उन्होंने केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई के निदेशक का पद संभाला। वर्ष 2002 में उनकी नियुक्ति उप महानिदेशक (मत्स्य पालन), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा 1 जनवरी, 2010 को सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक जैसे महत्वपूर्ण पदों पर हुआ, जहाँ लगभग आठ वर्षों तक उन्होंने सेवा किया। उन्होंने हैदराबाद में पशुपालन एवं डेयरी विभाग के अंतर्गत राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड की स्थापना कि जिसमें वे वर्ष 2006-2008 के बीच मुख्य कार्यकारी अधिकारी रहें।

वर्ष 2022 में, भारत सरकार ने विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उनकी विशिष्ट सेवा के लिए डा. अय्यप्पन को पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया है।

सम्मान और पुरस्कार

डा. अय्यप्पन को जलीय कृषि और संबंधित क्षेत्रों से संबंधित उनके योगदान के लिए कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें प्रमुख हैं:

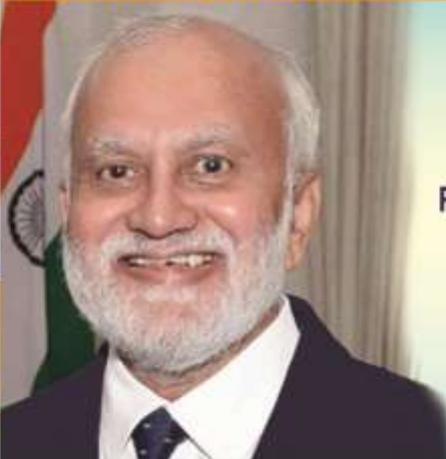
1. जहूर कासिम गोल्ड मेडल (1996-1997), सोसाइटी ऑफ बायोसाइंसेज इन इंडिया
2. विशेष आईसीएआर पुरस्कार (1997)

Platinum Jubilee Year - ICAR-CIFRI @75



भारत का अमृत महोत्सव
Bharat ka Amrut Mahotsav





03 August 2021
03:00 PM

**CIFRI:
Remembering
with
Reverence**

Dr. S. Ayyappan
Former Secretary, DARE &
DG, ICAR

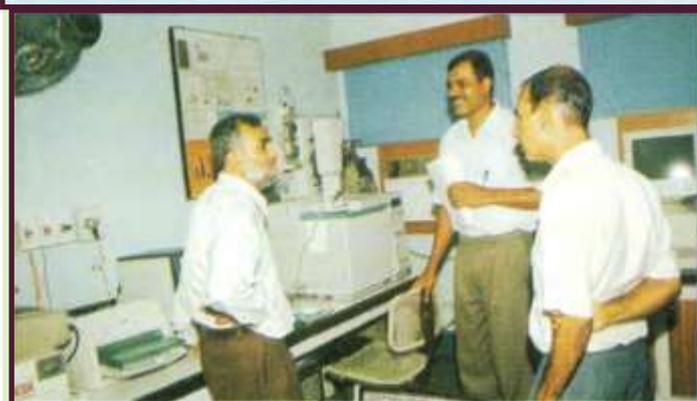
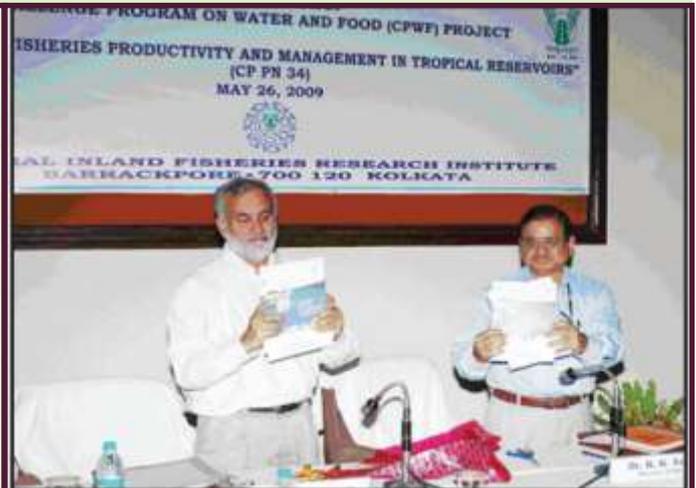
ICAR-CIFRI PLATINUM JUBILEE LECTURE SERIES #1

3. मात्स्यिकी में महत्वपूर्ण योगदान के लिए टीम लीडर के रूप में टीम रिसर्च के लिए भाकृअनुप पुरस्कार (1997-1998)
4. डॉ. वी.जी. झिंगरन गोल्ड मेडल (2002)
5. प्रो.एच.पी.सी. शेटी पुरस्कार (मात्स्यिकी अनुसंधान और विकास में उत्कृष्टता के लिए) एशियाई मात्स्यिकी सोसायटी (2002)



डॉ अय्यप्पन ने गत वर्ष 3 अगस्त, 2021 को भारत

के स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में भारत का अमृत महोत्सव और भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की स्थापना के 75वें वर्ष में संस्थान में व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत "सीआईएफआरआई: रिमेम्बरिंग विद रेवरेंस" (सिफरी: एक अभूतपूर्व यादों के झरोखे से) पर व्याख्यान दिया। इस पृष्ठ पर डॉ अय्यप्पन के साथ सिफरी परिवार के सदस्यों के बिताये गये पलों को सजोझने की कोशिश की गयी है।



भाकृअनुप केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में "आंध्र प्रदेश में घेरे में मछली पालन तकनीक द्वारा बड़े जलाशयों में मत्स्य पालन प्रौद्योगिकियों को प्रोत्साहन" पर इंटरफेस मीटिंग



भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में "आंध्र प्रदेश में घेरे में मछली पालन तकनीक द्वारा बड़े जलाशयों में मत्स्य पालन प्रौद्योगिकियों को प्रोत्साहन" पर इंटरफेस मीटिंग का आयोजन मुख्यालय में डॉ (श्रीमती) पूनम मलकोंडैया, आईएएस, विशेष मुख्य सचिव, कृषि और सहकारिता, पशुपालन, डेयरी और मात्स्यिकी, आंध्र प्रदेश सरकार तथा श्री के कन्ना बाबू, आईएएस, आयुक्त, मात्स्यिकी, आंध्र प्रदेश सरकार ने दिनांक 8 जनवरी 2022 को संस्थान का दौरा किया। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान में उपलब्ध सुविधाओं और प्रयोगशालाओं का निरीक्षण किया तथा निदेशक और संस्थान सदस्यों के साथ बातचीत की। इस अवसर पर एक बैठक बुलाई गई जिसमें डॉ. बि. के. दास, निदेशक ने मुख्य अतिथि डॉ (श्रीमती) पूनम मलकोंडैया, आईएएस, विशेष मुख्य सचिव, और विशिष्ट अतिथि श्री के कन्ना बाबू, आईएएस, मत्स्य पालन आयुक्त, आंध्र प्रदेश सरकार का स्वागत किया और संस्थान की गतिविधियों और उपलब्धियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने वैज्ञानिक पद्धति द्वारा मछली उत्पादन और जलीय कृषि के लिए उद्यमिता आधारित मॉडल विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया। विशेष मुख्य सचिव, डॉ. पूनम मलकोंडैया, आईएएस ने आंध्र प्रदेश राज्य की मात्स्यिकी गतिविधियों और उद्यम



जैसे राज्य विश्वविद्यालयों के सहयोग से किसान क्षेत्र के स्कूलों और पश्चिम गोदावरी जिले में मत्स्य विश्वविद्यालय की स्थापना के बारे में बताया। उन्होंने आंध्र प्रदेश में मत्स्य पालन के लिए दो प्रमुख क्षेत्रों, जैसे सतत मत्स्य पालन तकनीकों पर मछुआरों का प्रशिक्षण और उपज की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करने पर बल दिया। श्री. के. कन्ना बाबू, आईएएस, आयुक्त ने आंध्र प्रदेश के जलाशयों में पिंजरा पालन को बढ़ावा देने के लिए संस्थान के साथ



भावी साझेदारी की संभावना पर प्रकाश डाला। उन्होंने सजावटी मछली पालन और जीवित मछलियों के परिवहन के समय घटित मृत्यु दर को कम करने में संस्थान के तकनीकों को साझा करने पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि हालांकि आंध्र प्रदेश राज्य जलीय कृषि उत्पादन में अग्रणी है पर वहाँ मछलियों की घरेलू खपत कम है।

संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने भारत के अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों और विभिन्न जल निकायों में संस्थान द्वारा संचालित अनुसंधान गतिविधियों पर प्रस्तुति दी। उन्होंने पिंजरे में मछली पालन और उत्पादन वृद्धि के साथ-साथ भारतीय जलाशयों में उनकी उत्पादन क्षमता के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि आंध्र प्रदेश में पालन आधारित मत्स्य प्रबंधन को अपनाने के साथ बड़े और मध्यम जलाशयों की अनुमानित उत्पादन क्षमता क्रमशः 7449 टन और 4411 टन है। उन्होंने पिंजरे में मछली पालन और जलाशयों में उनकी स्थापना के लिए दिशा-निर्देशों के बारे में बताया और सिफरी जीआई केज, सिफरी केजप्रो फीड और सिफरी एचडीपीई पेन पर भी चर्चा की। उन्होंने पिंजरे में मछली पालन में प्रजाति विविधीकरण और उपयुक्त प्रजातियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने आश्वासन दिया कि इस दिशा में



सिफरी आंध्र प्रदेश सरकार के मछली उत्पादन में वृद्धि सहित मूल्य श्रृंखला विकास में तकनीकी सहायता प्रदान कर सकता है। डॉ. पूनम मालाकोंडाया, विशेष मुख्य सचिव ने आंध्र प्रदेश में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास के लिए संस्थान के साथ स्थायी साझेदारी पर जोर दिया। बैठक का समापन डॉ. यू. के. सरकार, प्रभागाध्यक्ष, जलाशय एवं आर्द्रक्षेत्र मात्स्यिकी प्रभाग के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

पश्चिम बंगाल के कालिम्पोंग और दार्जिलिंग जिले में पहाड़ी मत्स्य विकास के लिए मत्स्य और खाद्य वितरण और जन जागरूकता कार्यक्रम

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने अनुसूचित जाति उप योजना (एससीएसपी)/अनुसूचित जनजाति घटक (एसटीसी) कार्यक्रम के माध्यम से अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के उन्नयन के लिए पहाड़ी मत्स्य विकास के रूप में एक नया कार्यक्रम शुरू किया। संस्थान के निदेशक डॉ. वि. के. दास के नेतृत्व में लिए गए इस पहल के तहत,



संस्थान ने 29 और 30 दिसंबर, 2021 के दौरान कालिम्पोंग और दार्जिलिंग जिले में ग्रामीण अनुसूचित जाति के मछुआरों के आजीविका में सुधार के लिए दो जन जागरूकता सह मत्स्य और खाद्य वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। कालिम्पोंग जिले में पेमलिंग और गिडांग गांवों (कालिम्पोंग ब्लॉक) में 29 दिसंबर, 2021 को 50 मछुआरों को 70 किलो मछली फ्रीड और अंगुलिमीन (120 नंबर) वितरित किया गया। डॉ. दास ने

किसानों को ठंडे पानी की मछली प्रजातियों की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया जो कम तापमान में बेहतर विकसित हो सकती हैं। 30 दिसंबर, 2021 को दार्जिलिंग जिले के मिरिक में एक अन्य जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मंजू दारा गांव, मंजू गौरी गांव, लेप्चा विला, अमलबोटे, सौरिनी बस्ती, बूंगकुलुंग (मिरिक ब्लॉक), गोपालधारा गांव (सुखिया ब्लॉक) के 50 मछुआरों ने भाग लिया। सभी मछुआरों के पास अपना छोटा तालाब है लेकिन वे वैज्ञानिक रूप से मत्स्य पालन नहीं कर रहे हैं। संस्थान ने 100 मछली किसानों के बीच 12000 अमूर कार्प और ग्रास कार्प अंगुलिमीन और 7000 किलोग्राम चारा वितरित किया। डॉ. वि. के. दास ने मछली पालन के लिए मछली किसानों को प्रोत्साहित किया और पहाड़ी क्षेत्रों में सतत आजीविका विकास के लिए मत्स्य पालन के दायरे और महत्व के बारे में भी बताया। किसानों ने वैज्ञानिक तरीके से मछली पालन और उनके सामने आने वाली अन्य कठिनाइयों के बारे में बताया और सुझाव लिए। संस्थान के निदेशक महोदय ने मत्स्य किसानों को संस्थान की ओर से हर प्रकार की तकनीकी सहायता का आश्वासन दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पी.के.परिदा, डॉ.ए.के.दास और सुश्री श्रेया भट्टाचार्य ने किया। सुंदरबन ड्रीम्स द्वारा स्थानीय समर्थन और समन्वय प्रदान किया।



भाकृअनुप केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में मत्स्य पालन क्षेत्र में युवाओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम



संस्थान ने मत्स्य पालन क्षेत्र में युवाओं का ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से भागलपुर के मछली किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य विकास" पर 5-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (27-31 दिसंबर, 2021) का आयोजन किया। बिहार के सबौर केवीके, भागलपुर द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम में कुल 34 मत्स्य किसानों ने भाग लिया जिनमें ज्यादातर युवाएं शामिल थे। कार्यक्रम को भागलपुर के मछुआरों और मछली किसानों की आवश्यकता के आधार पर तैयार किया गया क्योंकि भागलपुर में गंगा के बेसिन के मौन और चौर सहित बारहमासी और मौसमी तालाबों, जलाशयों, नहरों की विशाल श्रृंखला है, जिससे जिले को अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के विकास के माध्यम से आजीविका में सुधार की पर्याप्त गुंजाइश मिलती है। संस्थान का उद्देश्य अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन के प्रति किसानों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण में अंतर को पाटना है। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास, ने युवाओं से मत्स्य पालन और जलीय कृषि के इस क्षेत्र में सक्रिय होने का आग्रह किया, जो 2025 तक किसानों की आय को दोगुना करने की दिशा में भारत के कृषि क्षेत्र के तहत सबसे शक्तिशाली



क्षेत्र के रूप में साबित हुआ है। डॉ. दास ने स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर ज्ञान और कौशल विकास के माध्यम से जिले के विशाल और विविध अन्तर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों का ठीक से गणना करने पर जोर दिया। उन्होंने मत्स्य पालन में उद्यमशीलता के अवसरों के बारे में भी बताया, जिनका बेहतर विपणन और व्यावसायिक कौशल के साथ उपयोग किया जा सकता है।

इस कार्यक्रम में तीन दिनों के इन-हाउस व्याख्यान के साथ-साथ प्रशिक्षण सत्र और पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि (ईकेडब्ल्यू), बाढ़ के मैदानों में पेन कल्चर साइट, आईसीएआर-सीफा फील्ड स्टेशन, बालागढ़, हुगली में नर्सरी, कल्याणी में प्रगतिशील मछुआरों सहित दो दिनों के फील्ड एक्सपोजर दौरे शामिल थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर सत्र शामिल थे, जैसे जल और मृदा रसायन, मछली का प्रेरित प्रजनन, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, आर्द्रभूमि प्रबंधन, सजावटी मछली पालन, केज में मछली पालन, मछली फ्रीड तैयार करना, केज स्टॉक उत्पादन के लिए पुनर्चक्रण प्रणाली, मछली विपणन आदि। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञान परीक्षण की मदद से प्रशिक्षुओं की आवश्यकता के आकलन के साथ की गई थी और संस्थान के भविष्य के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार के लिए उनसे फीडबैक के संग्रह के साथ समाप्त किया गया था।

भाकृअनुप-कारी के पूर्व निदेशक और संस्थान के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डॉ. एस. दाम रॉय ने प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र वितरित किया। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ए.के. दास, प्रभारी, विस्तार एवं प्रशिक्षण कक्ष द्वारा किया गया और श्री सतीश कौशलेश, वैज्ञानिक, आरडब्ल्यूएफ डिवीजन द्वारा यह कार्यक्रम समन्वयित किया गया।

आजीविका सुधार के लिए संस्थान में प्रशिक्षण के माध्यम से पूर्वी चंपारण, बिहार के किसानों के कौशल और ज्ञान का उन्नयन

बिहार राज्य का पूर्वी चंपारण जिला, अंतर्स्थलीय खुले जल - चौर, मौन, नालों, नहरों और जलाशयों के मामले में बहुत संसाधनपूर्ण है। परन्तु प्रचुर मात्रा में जलीय संसाधनों होने के बावजूद, इस जिले में मछली की आपूर्ति मांग से कम है। वर्तमान समय की आवश्यकता के आधार पर, मछुआरों की आय को दोगुनी करने ले लिये कौशल विकास और क्षमता निर्माण कार्यक्रम के रूप में 28 दिसंबर 2021 से 03 जनवरी 2022 के दौरान आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर में " अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 30 सक्रिय मछुआरों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. बि.के. दास, संस्थान के निदेशक ने मछुआरों की सतत आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं के विकास पर जोर



दिया। उन्होंने मछुआरों से वैज्ञानिक ज्ञान और अनुप्रयोगों को प्राप्त करके इष्टतम उत्पादन और उत्पादकता के लिए अपने उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने का भी आग्रह किया। प्रशिक्षण के दौरान, किसानों को तालाब निर्माण और प्रबंधन, मिट्टी और पानी की गुणवत्ता प्रबंधन, फ्रीड



और फीडिंग प्रोटोकॉल सहित अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं को कवर करने वाले ऑन-फील्ड प्रदर्शनों के साथ-साथ आंतरिक सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान दोनों से अवगत कराया गया। सजावटी मछली पालन, मछलियों के प्रजनन पहलू, पोषण संबंधी आवश्यकताएं, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, केज में मत्स्य पालन, विभिन्न मछली संस्कृति गतिविधियों के आर्थिक पहलू, मछली विपणन, प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना पर सिंहावलोकन, आदिविषय पर चर्चा की गयी। आईसीएआर-सीफा कल्याणी मछली फार्म, खमरगाछी और बालागढ़ प्रगतिशील मछली फार्म, पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि (ईकेडब्ल्यू), सजावटी मछली बाजार, आदि का फील्ड एक्सपोजर दौरे करवाएं गये स्टॉक उत्पादन के लिए पुनर्चक्रण प्रणाली एकाकल्चर सिस्टम (आरएस). बायो-फ्लोक इकाइयां, सजावटी हैचरी इकाइयां और संस्थान की फीड मिल को भी दिखाया गया। साथ ही विभिन्न आवश्यकता-आधारित पहलुओं जैसे बुनियादी जल गुणवत्ता मानकों, स्थानीय रूप से उपलब्ध फ्रीड सामग्री का उपयोग करते हुए मछली फ्रीड तैयार करने पर व्यावहारिक प्रशिक्षण, मछली रोगजनकों की पहचान और उनके संबंधित उपचारात्मक उपायों आदि का ज्ञान प्रदान किया।

फीडबैक सत्र में प्रशिक्षुओं के द्वारा प्रशिक्षण को संतुष्टिजनक माना गया। प्रशिक्षुओं ने अपने ज्ञान के वर्धन को स्वीकार किया और कहा कि इसे वे उनके संबंधित जल संसाधनों में इस्तेमाल करेंगे। डॉ. एस. सामंत, प्रमुख आरईएफ डिवीजन ने अपने समापन भाषण में किसानों को इस प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान को और अधिक उत्पादन को समेकित करने के लिए लागू करने का आह्वान किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. ए के दास, प्रभारी, विस्तार एवं प्रशिक्षण प्रकोष्ठ द्वारा सफलतापूर्वक किया गया और संस्थान के आरईएफ डिवीजन के वैज्ञानिक डॉ. डी.भक्ता द्वारा समन्वयित किया गया।



संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी द्वारा विकसित कल्चर आधारित मत्स्य पालन और पेन संवर्धन प्रौद्योगिकियों को अपनाने से बामुनी बील, असम में आदिवासी मछुआरों की आय में वृद्धि: सफलता की एक कहानी



भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने पूर्वोत्तर भारत के बाढ़ के मैदानों (बील) के लिए कल्चर आधारित मत्स्य पालन (सीबीएफ) और पेन कल्चर प्रौद्योगिकी के लिए प्रोटोकॉल विकसित किए। संस्थान के निदेशक डॉ. वि. के. दास के नेतृत्व में संस्थान द्वारा शुरू की गई आउटरीच गतिविधियों के हिस्से के रूप में और एनईएच घटक के तहत डॉ. जे. के. जेना, डीडीजी (मात्स्यिकी विज्ञान), आईसीएआर, नई दिल्ली के मार्गदर्शन में, संस्थान ने बामुनी बील (एन 26° 18' 91" और ई 91° 45' 60"), कामरूप ग्रामीण जिला, असम में कल्चर आधारित मत्स्य पालन (सीबीएफ) और पेन कल्चर का प्रदर्शन किया। संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा 02/12/2019 को बील में एक क्षेत्र सर्वेक्षण किया गया और बोडो आदिवासी समुदाय के बील मछुआरों के साथ बातचीत की गयी।



बामुनी बील निचली ब्रह्मपुत्र घाटी का एक बंद बाढ़ का मैदान है। यह एक 16 हेक्टेयर का, आकार में लगभग अंडाकार छोटी बील है। वर्षा के दिनों में बील में पानी की गहराई 2.5-3.7 मीटर होती है जो सर्दियों के दौरान घटकर 1.5-2.5 मीटर हो जाती है जिससे यह पेन कल्चर और सीबीएफ दोनों के लिए उपयुक्त हो जाता है। बेजेरा विकास खंड के बामुनीगांव के कुल 65 आदिवासी (बोडो) परिवार अपने पोषण और आजीविका की जरूरतों को पूरा करने के लिए बील पर निर्भरशील हैं। वर्ष 2006-07 से पहले, बील पार्टियों को, सालाना काफी कम राशि (रु. 15,000-20,000/- प्रति माह) के लिए पट्टे पर दिया गया था। बील के



चारों ओर एक परिधि बांध का निर्माण एआरआईएएस सोसाइटी, असम सरकार द्वारा किया गया था जो विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित था और 2011-12 के दौरान एआरआईएएस सोसाइटी को एएसीपी परियोजना के तहत और मजबूत किया गया था। बील में बहुत कम पूरक स्टॉकिंग का अभ्यास किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप 2019-20 के दौरान कम मछली उत्पादन (लगभग 6.29 टन) और समुदाय के सदस्यों (17,692 रुपये प्रति परिवार) की मामूली वार्षिक आय हुई।

स्थानीय आदिवासी मछुआरे परिवारों की आय बढ़ाने के लिए सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से सीबीएफ और पेन कल्चर का प्रदर्शन करने के लिए बील का चयन किया गया था। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, प्रधान वैज्ञानिक और क्षेत्रीय केंद्र के प्रमुख; श्री ए. के. यादव, डॉ. प्रणव दास और डॉ. एस. बोरा, ने इस विषय पर जागरूकता कार्यक्रम (2 नंबर) आयोजित करने के बाद बील में पूरक मछली बीज भंडारण कार्यक्रम का आयोजन 19 अक्टूबर, 2020 और 23 फरवरी, 2021 तारीख को किया। सिफरी एचडीपीई (CIFRI-HDPE) पेन का उपयोग भी उसी समय किया गया। संस्थान ने कुल 48,000 भारतीय प्रमुख कार्प, माइनर कार्प और विदेशी कार्प सहित उन्नत मछली अंगुलिमीन (@ 3000 संख्या प्रति हेक्टेयर) स्थानीय समुदाय के परामर्श से सीबीएफ के लिए बील में छोड़ा। बील में स्थापित सिफरी - एचडीपीई पेन (3000 मीटर /स्क्वैर क्षेत्र) को कार्प अंगुलिमीन (3-9 नं. प्रति मीटर / क्यूब) के साथ स्टॉक किया गया था और अतिरिक्त आय के रूप में टेबल फिश के उत्पादन के लिए सिफरी-केजग्रो फ्लोटिंग फीड (28% कूड प्रोटीन) खिलाया गया। बामुनी बील विकास समिति (बीबीडीसी) के बैनर तले मछुआरा समुदाय ने संस्थान द्वारा प्रदान किए गए तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त किया। पेन में 6 महीने की अवधि के लिए मछलियों को पाला गया। 7 सितंबर, 2021 को बड़े आकार की मछलियों को पकड़ा गया और बील में छोटी मछलियों को छोड़ा गया। बील से मछलियों को 12-13 जनवरी, 2022 के दौरान पकड़ा गया और अच्छी कीमत (औसत 230 रुपये प्रति किलो) पाने के लिए माघ बिहू (असमिया समुदाय त्योहार) के अवसर पर बेचा गया। 2021-22 (अब तक) के दौरान बील से कुल 13.52 टन मछलियों को पकड़ा और बेचा गया। गांव के सभी 65 बड़ो आदिवासी मछुआरे परिवारों की सालाना आय रु. 44,763 प्रति परिवार हैं। सीबीएफ और पेन कल्चर को सफलतापूर्वक अपनाने से कुल मछली उत्पादन में 117% की वृद्धि हुई और 2019-20 की तुलना में स्थानीय आदिवासी मछुआरों की आय में 153% की वृद्धि हुई। श्री मोहन स्वर्गियारी, अध्यक्ष और श्री बोलिन बोरो, बीबीडीसी के सचिव के नेतृत्व में स्थानीय आदिवासी समुदाय ने बड़ी हुई आय पर प्रसन्नता व्यक्त की और अपनी आय और आजीविका बढ़ाने के लिए पेन कल्चर सहित सीबीएफ का अभ्यास जारी रखने का वादा किया।

73 वां गणतंत्र दिवस समारोह

भाकृअनुप-सिफरी में 73वां गणतंत्र दिवस बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। संस्थान परिसर को रोशनी, झंडों और फूलों से खूबसूरत ढंग से सजाया गया था। इस विशेष अवसर पर संस्थान परिसर में एक सुंदर रंगोली भी बनाई गई थी। 26 जनवरी, 2022 की सुबह संस्थान के सुरक्षा गार्डों द्वारा परेड मार्च के साथ समारोह की शुरुआत हुई। डॉ. वि. के. दास, संस्थान के निदेशक ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और

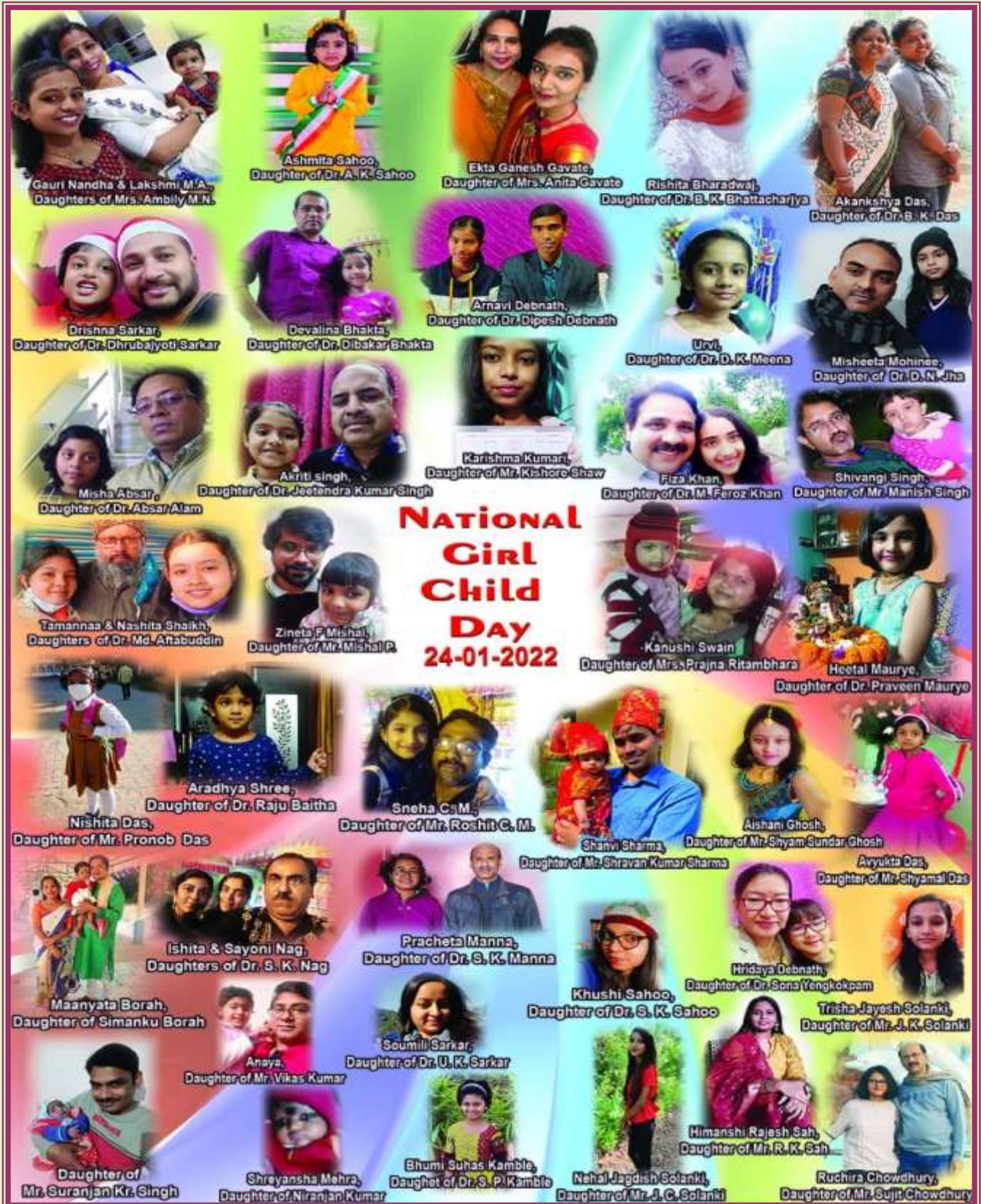


इसके बाद राष्ट्रगान गाया गया। निदेशक ने संस्थान के कार्यों के लिए स्टाफ सदस्यों की ईमानदारी पर ध्यान केंद्रित करते हुए कर्मचारियों को संबोधित किया। उन्होंने वर्ष 2021 के दौरान संस्थान और स्टाफ सदस्यों को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा अन्य संगठनों द्वारा प्रदान किए गए विभिन्न पुरस्कारों पर प्रकाश डाला। उन्होंने जोर दिया कि संस्थान में कोविड अवधि के दौरान कठिनाइयों और सीमित संसाधनों के बावजूद प्रगति हुई है। निदेशक ने संस्थान सदस्यों के अथक और ईमानदार प्रयासों के लिए प्रशंसा की और साथ ही संस्थान की सफलता को उच्च स्तर पर रखने के लिए सभी को कड़ी मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके बाद संस्थान सदस्यों और उनके बच्चों द्वारा देशभक्ति गीत और कविताएं प्रस्तुत की गईं। इस विशेष दिन पर संस्थान में निदेशक महोदय द्वारा प्रभागों, ईकाईयों, वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक, कुशल सहायता और शोध छात्र श्रेणी में "सर्वश्रेष्ठ कर्मी" का पुरस्कार दिया गया। साथ ही, संस्थान कर्मियों के छः ऐसी बालिकाओं को सम्मानित किया गया जिन्होंने कक्षा 10वीं और 12वीं में अधिकतम अंक प्राप्त किया है (90 प्रतिशत से अधिक)। इसके बाद स्टाफ सदस्यों के बीच मिष्ठान्न पैकेट वितरित किए गए।



सिफरी ने राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मास्त्रिकी अनुसंधान संस्थान ने कर्मियों के बीच बालिकाओं के अधिकारों, शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण को बढ़ावा संबंधित जागरूकता बढ़ाने के लिए 24 जनवरी 2022 को राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया। इस अवसर पर संस्थान कर्मियों ने अपनी बेटियों के साथ अपने-अपने चित्र साझा किए। ऐसी कुल छत्तीस तस्वीरों का एक सुंदर कोलाज तैयार किया गया जिसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को भेजा गया। साथ ही, संस्थान कर्मियों के छः ऐसी बालिकाओं को सम्मानित किया गया जिन्होंने कक्षा 10वीं और 12वीं में अधिकतम अंक प्राप्त किया है (90 प्रतिशत से अधिक)। यह दिवस बालिकाओं के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा बनाया गया है।



संस्थान ने कल्चर आधारित मत्स्य पालन और पेन प्रौद्योगिकियों के माध्यम से आदिवासी मछुआरों की आय में वृद्धि की: चरण बील, असम से सफलता की एक कहानी



भाकृअनुप – केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर की संस्कृति आधारित मत्स्य पालन (सीबीएफ) और पेन कल्चर तकनीक बाढ़ के मैदानों में उत्पादन को बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प हैं। संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास और डॉ.जे.के.जेना, डीडीजी (मात्स्यिकी विज्ञान), आईसीएआर, नई दिल्ली, की प्रेरणा से चरण बील (एन 26° 28' 28.62" और ई 91° 40' 12.82"), बक्सा जिले असम में संस्थान के एनईएच घटक के तहत संस्कृति आधारित मत्स्य पालन (सीबीएफ) और पेन कल्चर का प्रदर्शन किया गया। चरण बील धुलबारी, देउलकुची, बक्सा, असम में स्थित एक बंद बाढ़ का मैदान है। यह 11 हेक्टेयर क्षेत्रफल वाली एक छोटी बील है, जिसमें

पानी की गहराई 1.2-3.9 मीटर है। बोडो समुदाय से संबंधित कुल 133 आदिवासी मछुआरे परिवार अपनी पोषण और आजीविका की जरूरतों को पूरा करने के लिए बील पर निर्भरशील हैं। 2020-21 से पहले, बील में बहुत कम या कोई पूरक स्टॉकिंग का अभ्यास नहीं किया जाता था, जिसके कारण मछली उत्पादन वांछनीय स्तर पर नहीं था। 2018-19 के दौरान, बील से कुल मछली उत्पादन 3.18 टन और बील से प्रति मछुआरा परिवार की वार्षिक आय केवल रु.3,652.00 था।

सीबीएफ के लिए, भारतीय प्रमुख कार्प (आईएमसी) और लेबियो गोणियस और लेबियो बाटा वाली मध्यम और छोटी कार्प की अग्रिम अंगुलियों को दिसंबर, 2020 के दौरान बील में स्टॉक किया गया था। संस्थान द्वारा सीबीएफ के लिए बंद बील में तैयार





किए गए दिशानिर्देशों के अनुसार (जिसमें कोई नदी नहीं है), अंगुलिमीन को 3000 नं./हेक्टेयर की दर से स्टॉक किया गया था। बील में कुल 33,000 अग्रिम अंगुल्मीनो का स्टॉक किया गया था। इसके अलावा, बील में सिफरी एचडीपीई पेन का उपयोग करते हुए पेन कल्चर भी किया गया। मछलियों को फरवरी-मार्च, 2021 के दौरान पेन में रखा गया था और छह महीने के बाद सितंबर, 2021 के पहले सप्ताह के दौरान पकड़ा गया था। मछलियों का उत्पादन बढ़ाने के लिए पेन से बील में छोड़ दिया गया था।

बील में वैज्ञानिक सीबीएफ प्रोटोकॉल और पेन कल्चर के प्रदर्शन के बाद, 2021-22 के दौरान बील में मछली उत्पादन 1.5 गुना से अधिक बढ़कर 5.22 टन हो गया। बील से मछली पकड़ने से प्रति मछुआरा परिवार की वार्षिक आय भी बढ़कर रु.7,519.00 हो गई। 2021-22 के दौरान, चरण बील में सीबीएफ और पेन कल्चर के सफल कार्यान्वयन से 2018-19 की तुलना में कुल मछली उत्पादन में 64% की वृद्धि हुई और 133 स्थानीय आदिवासी मछुआरे परिवारों की वार्षिक आय (बील मत्स्य पालन से) में 106% की वृद्धि हुई। प्रति व्यक्ति मछली उत्पादन (किलो/मछुआरा परिवार) 2018-19 में 23.89 किलोग्राम से बढ़कर 2021-22 के दौरान 39.23 किलोग्राम हो गया, जबकि प्रति इकाई क्षेत्र में मछली उत्पादन 1.5 गुना से अधिक 288.91 किलोग्राम / हेक्टेयर / वर्ष से बढ़कर 474.27 किलोग्राम / हेक्टेयर हो गया। बील में सभी गतिविधियों को स्थानीय आदिवासी मछुआरे समुदाय की सक्रिय भागीदारी के साथ सह-प्रबंधन मोड में किया गया था।



सीबीएफ और पेन कल्चर कार्यक्रमों का प्रदर्शन संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, श्री ए.के. यादव, डॉ. प्रणव दास, डॉ. सिमंकू बोरा, वैज्ञानिक; और श्री अमूल्य काकाती, वरिष्ठ तकनीशियन द्वारा किया गया। प्रदर्शन के दौरान सभी कर्मियों द्वारा एक जागरूकता कार्यक्रम और एक फील्ड दिवस भी आयोजित किया गया। श्री नरेंद्र बसुमतारी, अध्यक्ष और श्री जादू स्वर्गियारी, सचिव, धुलाबाड़ी चरणपुर जनजाति उन्नयन समिति के नेतृत्व में स्थानीय आदिवासी समुदाय ने उत्पादन और आय में वृद्धि पर प्रसन्नता व्यक्त की और बील में सीबीएफ और पेन कल्चर को जारी रखने का वादा किया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- पश्चिम बंगाल के बालागढ़ में गंगा नदी से कुल अनुमानित मछली पकड़ 0.074 टन था जिसमें सबसे अधिक *टेनुआलोसा इलिशा* का प्रतिशत 0.012 टन (17.01%) देखा गया। इस अवधि के दौरान संकटग्रस्त प्रजाति, *पंगोसियस पैंगोसियस* 0.008 टन (10.67 प्रतिशत) पाया गया। भारतीय मेजर कार्प प्रजातियों में कतला (*लेबियो कतला*) 0.007 टन (9.87 प्रतिशत) और *लैबियो रोहिता* (8.12%) का स्थान रहा।
- दिसंबर 2021 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से 06.039 टन मछली लैंडिंग का अनुमान किया गया था। पिछले महीने की तुलना में कुल मछली पकड़ने में लगभग 32.00 प्रतिशत की कमी आई है।
- फरक्का के ऊपरी क्षेत्र में लगभग 2509 हिल्सा मछलियों को पकड़ गया जिनमें 75 टैग किए हुए थे।
- हुगली-मातलह मुहाना में बैंगनेट कैच में *टेनुआलोसा इलिशा*, *कोइला डुसुमेरी*, *पॉलीनेमस पैराडिसियस*, *ओटोलिथोइड पामा* आदि किशोर मछलियों का वर्चस्व देखा गया। इसके अलावा, झींगा प्रजातियों (एसीड प्रजातियाँ) की उपस्थिति स्थायी मछली पालन के लिए अत्यधिक हानिकारक है।
- केरल के एक बड़े जलाशय इडुक्की के मत्स्य पालन के आकलन से पता चला है कि भारतीय मेजर कार्प प्रजातियाँ, *लेबियो कतला* और *लेबियो रोहिता* का कुल मछली पकड़ में 22% का योगदान है जबकि विदेशी प्रजातियों (मुख्य रूप से कॉमन कार्प और तिलपिया) की प्रचुरता देखी गई है।
- दक्षिणी (कर्नाटक) और पूर्वी भारत (ओडिशा और पश्चिम बंगाल) के 8 छोटे जलाशयों के अध्ययन में इनमें अल्पपोषी से मेसोट्रोफिक उत्पादकता स्थिति पाया गया जो पालन आधारित मात्स्यिकी द्वारा मत्स्य उत्पादन वृद्धि के लिए उपयुक्त है। संचयित भारतीय मेजर कार्प प्रजातियाँ का कुल मछली पकड़ में लगभग 90 प्रतिशत का योगदान है, जो ओडिशा के सुनेइ जलाशय में मछली उत्पादन पर संचयन के सकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है।
- हिमाचल प्रदेश के गोबिंदसागर जलाशय के वैज्ञानिक मूल्यांकन में जलाशय की मत्स्य विविधता में गिरावट का पता चलता है। जलाशय में व्यावसायिक तौर कि केवल 15 प्रजातियाँ पाई गईं। विदेशी कार्प प्रजातियाँ, *हाइपोथालमिक्थिस मोलिट्रिक्स* और *साइप्रिनस कार्पियो* को सबसे प्रभावशाली टैक्सा के रूप में दर्ज किया गया था, जिनका लगभग 80% देखा गया, जबकि *स्परेटा सिंधला* और *लेबियो डायोचिलस* की उपस्थिति भी देखी गई पर गोल्डन महासीर और *टोर पुटिटोरा* की उपस्थिति बहुत कम दर्ज की गई।
- असम की तीन आर्द्रभूमि में किए गए कार्बन सीक्वेंस्ट्रेशन अध्ययन से पता चला है कि इन सभी आर्द्रभूमि में पूर्व में अध्ययन किए गए

स्थलों की तुलना में मिट्टी में कार्बन की सांद्रता 30 सेमी गहराई (1.7 से 4.2 गुना) तक पाई गई थी।

बैठकें

- गुजरात सरकार, महाराष्ट्र सरकार, मध्य प्रदेश सरकार और मात्स्यिकी एवं पशुपालन विभाग, मात्स्यिकी मंत्रालय तथा सिफरी के बीच सरदार सरोवर जलाशय में एकीकृत मत्स्य प्रबंधन और जलाशय मत्स्य पालन में सुधार के लिए एक संयुक्त समिति की बैठक दिनांक 20 दिसम्बर 2021 को आयोजित हुई।

गतिविधियां

संस्थान ने दिनांक 27-29 दिसंबर, 2021 के दौरान अंतर्राष्ट्रीय नदी अधिवेशन में भाग लिया। इस अधिवेशन का आयोजन राष्ट्रीय पुस्तकालय परिसर, कोलकाता में नीति आयोग, भारत सरकार के तहत पंजीकृत दक्षिण एशियाई उन्नत अनुसंधान एवं विकास संस्थान (एसएआईएआरडी) द्वारा किया गया था।

संस्थान में दिनांक 28 दिसंबर 2021 से 3 जनवरी 2022 तक बाह्य लेखा परीक्षा दल का आगमन हुआ।

संस्थान के वैज्ञानिक, अधिकारी और कर्मचारियों ने दिनांक 4 जनवरी 2022 को माननीय महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की अध्यक्षता में आईसीएआर के ऑनलाइन समीक्षा बैठक में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 7 जनवरी 2022 को जूम प्लेटफॉर्म पर भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन (आईएससीए) के साथ बैठक में भाग लिया।

संस्थान ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से दिनांक 12 जनवरी 2021 को "नदी घाटी परियोजना" के लिए विशेषज्ञ मूल्यांकन समिति की 22वीं बैठक में भाग लिया।

संस्थान ने वर्चुअल मोड में कृषि विज्ञान केंद्र के कामकाज में सुधार के लिए दिनांक 18 जनवरी, 2022 को तीसरी वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में भाग लिया।

संस्थान ने वर्चुअल मोड में दिनांक 19 जनवरी, 2022 को नीति आयोग के साथ बैठक में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 21 जनवरी, 2022 को निदेशक (मत्स्य), ओडिशा सरकार के साथ बैठक में भाग लिया। इस बैठक का उद्देश्य संस्थान के साथ सहयोगी परियोजना की प्रगति पर विचार विमर्श था।

संस्थान ने दिनांक 1 से 16 जनवरी 2022 के दौरान फरक्का बैराज, मुर्शिदाबाद के ऊपरी और निचले क्षेत्रों में 13 हिल्सा और डॉल्फिन संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए हैं। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान 270 (242 पुरुष और 27 महिला) मछुआरों की सक्रिय भागीदारी देखी गई। कार्यक्रम का आयोजन कोविड प्रोटोकॉल का पालन करते हुए किया गया।

सिफरि समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

सिफरी द्वारा पश्चिम बंगाल के कालिम्पोंग और दार्जिलिंग जिले में पछड़ी क्षेत्रों में आयोजन

मत्स्य आदान वितरण और जन जागरुकता कार्यक्रम



वेदराज ड. काम सिंघेट

ककूअणु-केंद्रीय अन्तरराष्ट्रीय मत्स्यसंधान संस्थान, बैरकपुर में आयोजित कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले में आयोजित कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



कार्यक्रम के लिए विशेषज्ञों द्वारा 7000 किगोमल मछली पुरान वितरित किया। डॉ. वि.के. राय ने पछड़ी क्षेत्रों के लिए मत्स्य विकास की योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

প্রাণী বিকাশ

খাঁচায় মাছ চাষ পরিদর্শনে অন্ধ্র প্রদেশের বিজ্ঞানীগণ

विज्ञान और पशुपालन विभाग के विशेषज्ञों ने पछड़ी क्षेत्रों में मत्स्य आदान वितरण और जन जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया।



कार्यक्रम के लिए विशेषज्ञों द्वारा 7000 किगोमल मछली पुरान वितरित किया। डॉ. वि.के. राय ने पछड़ी क्षेत्रों के लिए मत्स्य विकास की योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

दशम दुनिया

देश के बड़े जलाशयों में मत्स्य पालन प्रौद्योगिकियों के प्रोत्साहन पर बैठक



वेदराज ड. काम सिंघेट

ककूअणु-केंद्रीय अन्तरराष्ट्रीय मत्स्यसंधान संस्थान, बैरकपुर में डॉ. (श्रीमती) पुनम मल्लिकोंटिया, आईआईएम, विशेष मुख्य सचिव, कृषि और सार्वजनिक, जलसंधान, डेयरी और मत्स्यसंधान, आंध्र प्रदेश सरकार तथा श्री के. कान्ना बाबु, आईआईएम, आंध्र प्रदेश, मत्स्यसंधान और उद्यम जैसे राज्य विपक्षितालयों के सहयोग से किसान क्षेत्र के स्कूलों और परिवार मोबाइल जिले में मत्स्य विपक्षितालय की स्थापना के बारे में बतया।



पर मछली पालन का प्रोत्साहन और उद्यम की प्रोत्साहन पर चर्चा केन्द्रित करने पर बल दिया। डॉ. कान्ना बाबु, आईआईएम, आंध्र प्रदेश के जलाशयों में पंचम पालन को बढ़ावा देने के लिए संस्थान के साथ शायी साझेदारी की संभावना पर प्रकाश डाले।

इस अवसर पर एक बैठक मुलाई गई जिसमें डॉ. वि.के. राय, निदेशक ने मुख्य सचिव डॉ. (श्रीमती) पुनम मल्लिकोंटिया, आईआईएम, विशेष मुख्य सचिव, और विभिन्न अतिथि श्री के. कान्ना बाबु, आईआईएम, मत्स्य पालन आयुक्त, आंध्र प्रदेश सरकार का स्वागत किया और संस्थान की क्षमताओं और उपकरणों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने वैज्ञानिक पद्धति द्वारा मछली पालन और जलीय कृषि के लिए उच्चतम आधुनिक मॉडल विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया। विशेष मुख्य सचिव, डॉ. पुनम मल्लिकोंटिया, आईआईएम ने आंध्र प्रदेश राज्य की मत्स्यसंधान और उद्यम जैसे राज्य विपक्षितालयों के सहयोग से किसान क्षेत्र के स्कूलों और परिवार मोबाइल जिले में मत्स्य विपक्षितालय की स्थापना के बारे में बतया। उन्होंने आंध्र प्रदेश में मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए दो प्रमुख क्षेत्रों, जैसे सतल मत्स्य पालन तकनीकों

বর্তমান

খাঁচায় মাছ চাষে উৎসাহ সিফরির

विज्ञान और पशुपालन विभाग के विशेषज्ञों ने पछड़ी क्षेत्रों में मत्स्य आदान वितरण और जन जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम के लिए विशेषज्ञों द्वारा 7000 किगोमल मछली पुरान वितरित किया। डॉ. वि.के. राय ने पछड़ी क्षेत्रों के लिए मत्स्य विकास की योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम के लिए विशेषज्ञों द्वारा 7000 किगोमल मछली पुरान वितरित किया। डॉ. वि.के. राय ने पछड़ी क्षेत्रों के लिए मत्स्य विकास की योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

বর্তমান

খাঁচায় মাছ চাষ করতে আগ্রহী অন্ধ্রপ্রদেশ, সিফরি ঘুরে গেল প্রতিনিধিদল

विज्ञान और पशुपालन विभाग के विशेषज्ञों ने पछड़ी क्षेत्रों में मत्स्य आदान वितरण और जन जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम के लिए विशेषज्ञों द्वारा 7000 किगोमल मछली पुरान वितरित किया। डॉ. वि.के. राय ने पछड़ी क्षेत्रों के लिए मत्स्य विकास की योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम के लिए विशेषज्ञों द्वारा 7000 किगोमल मछली पुरान वितरित किया। डॉ. वि.के. राय ने पछड़ी क्षेत्रों के लिए मत्स्य विकास की योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

विज्ञान और पशुपालन विभाग के विशेषज्ञों ने पछड़ी क्षेत्रों में मत्स्य आदान वितरण और जन जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक, संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मोर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कू.अनु.प.-केंद्रीय अन्तरराष्ट्रीय मत्स्यसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत
दूरभाष: +91-33-25921190/91; फेक्स: +91-33-25920388; ई-मेल: director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट: www.cifri.res.in